पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की संकल्पनाऐ - स्कीमा , आत्मसातीकरण , समायोजन व साम्यधारण

CTET Exam Notes : Child Development and Pedagogy (CDP)

in Hindi Medium

Topic : Piaget's Theory Of Cognitive Development

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र : पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की संकल्पनाऐ

पियाजे के अनुसार बच्चा अपने वातावरण के साथ अन्तक्रिया के परिणामस्वरूप ही सीखता है। संज्ञानात्मक विकास से तात्पर्य चिंतन में गुणात्मक परिवर्तन से है तथा यह परिवर्तन पहले से उपसिथत संज्ञानात्मक संरचनाओं में अनुकूलन द्वारा होता है। यह परिवर्तन अपरिहार्य व अपरिवर्तनीय तथा जैव-निर्धरित होता है।

संक्षेप में पियाजे के अनुसार बालकों में वास्तविकता के स्वरूप में चिंतन करने, उसकी खोज करने, उसके बारे में समझ बनाने तथा उनके बारे में सूचनाएँ एकत्रित करने की क्षमता, बालक के परिपक्वता स्तर तथा बालक के अनुभवों की पारस्परिक अन्त: क्रिया द्वारा निर्धारित होती है।बालक अपने विश्व की ज्ञान रचना में 'स्कीमा का प्रयोग करता है।

स्कीमा (Schema)

Schema स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचना से है जो व्यकित विशेष के मसितष्क में सूचनाओं को संगठित तथा व्याख्यायित करने हेतु विधमान होती है। यह 'स्कीमा दो प्रकार का होता है पहला साधारण तथा दूसरा जटिल। साधरण 'स्कीमा मोटरकार या खिलौने के 'स्कीमा से समझा जा सकता है। इसी प्रकार अंतरिक्ष का निर्माण कैसे हुआ का 'स्कीमा, जटिल 'स्कीमा का उदाहरण होगा।

पियाजे के अनुसार बच्चे 'स्कीमा के संशोधित व समायोजित करने में दो प्रक्रियाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

(1)**आत्मसातीकरण** (Assimilation)

वह प्रक्रिया है जिसमें बालक नए ज्ञान को पूर्ण ज्ञान योजनाओं में शामिल कर लेता है, अर्थात बालक नए ज्ञान का आत्मसात अपने पुराने 'स्कीमा में कर लेता है।

(2)**समायोजन** (Accommodation)

वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें बालक नई सूचना के अनुसार समायोजन करता है अर्थात 'स्कीमा को वातावरण के अनुसार समायोजित कर लेता है। साथ ही जब बालक के सामने ऐसी परिसिथति या समस्या आती है, जिसका उसे कभी अनुभव नहीं हुआ, तो इससे उसमें एक तरह का संज्ञानात्मक असंतुलन उत्पन्न होता जाता है। जिसे दूर करने के लिए या उनमें संतुलन लाने के लिए बालक आत्मसातीकरण या समायोजन या दोनो प्रक्रियाएँ करना आरंभ कर देता है। इस प्रक्रिया को साम्यधारण (**Equilibrium**) कहते हैं।

इसे पियाजे ने बच्चे द्वारा एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचने की प्रक्रिया को समझाने हेतु प्रयुक्त किया है। पियाजे के अनुसार जब बालक विचारों में असंतुलन से संतुलन की ओर जाता है (साम्यधरण प्रक्रिया द्वारा), तो बालक में संज्ञानात्मक परिवर्तन आता है जो कि गुणात्मक होता है। उदाहरण के लिए अगर बच्चा यह मानता है कि पानी की मात्रा में परिवर्तन केवल इसलिए हो जाता हैं क्योंकि यह एक अलग रूप के बर्तन (छोटे व चौड़े बर्तन से लम्बे व अपेक्षाकृत संकरे)में डाल दिया गया है, अत: इस सिथति में वह बालक हमेशा ही इस बात को लेकर असमंजस की स्थिति में होगा कि यह अतिरिक्त या ज्यादा पानी कहाँ से आया? और क्या वास्तव पानी की ज्यादा मात्राा उपलब्ध् है? बच्चे इस असमंजस को तभी सुलझा (कि पानी की मात्राा समान है,)पाते हैं जब उनके विचारों में उच्च क्षमता विकसित हो पाती है।

पियाजे का यह मानना था कि बच्चें ज्ञान के निर्माण में क्रियाशील रहते हैं इसके साथ उनका कहना था कि उनका संज्ञानात्मक विकास चार क्रमागत अवस्थाओं से होकर गुजरता है। प्रत्येक अवस्था आयु-विशेष में होती है तथा प्रत्येक में चिंतन के विशेष प्रकार पाए जाते हैं, और चिंतन का भिन्न एवं उच्च प्रकार ही एक अवस्था को दूसरी अवस्था से अलग व विभेदित करता है। पियाजे के अनुसार केवल सूचनाएँ एकत्रण से बच्चा ऊपरी अवस्था में नहीं पहुँचता अपितु उनका प्रयोग, समस्या समाधन व तर्क देने में कितने बेहतर एवं गुणात्मक रूप से कर पाता है, यह निर्धारित करता है कि वह किस अवस्था में है।

पियाजे द्वारा बालकों के संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या हेतु बताई गई चार अवस्थाओं का संक्षेप में विवरण अवश्ये पढ़े- **पियाजे का संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत**

Saba Pasha

Saba Pasha is the founder and CEO of TET Success Key. She created one of the best site for exam preparation.Here you can find latest exam updates and free study material for your exam preparation.